Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Level-II || भाग – I

सामाजिक अध्ययन

इतिहास, कला -संस्कृति तथा संविधान

SIERRA INNOVATIONS

भारत का इतिहास, कला एवं संस्कृति

(1) सिंधुघाटी सभ्यता 1
(2) वैदिक सभ्यता और आर्य सभ्यता 14
(3) मौर्य साम्राज्य 27
(4) गुप्त साम्राज्य 40
(5) राजपूत काल 56
(6) भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रसार 61
(7) सूफीमत 65
(8) भक्ति आंदोलन 69
(9) मुगल साम्राज्य 74
(10) 1857 की क्रांति 90
(11) भारत में राष्ट्रवाद का उदय 96

राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति

(1) सामान्य परिचय 110
(2) राजस्थान का एकीकरण 110
(3) राजस्थान के प्रमुख किसान व जनजातियां आंदोलन 114
(4) 1857 की क्रांति (राजस्थान संदर्भ) 122
(5) राजस्थान के प्रमुख महल 127
(6) राजस्थान की सभ्यताएं 131
(7) राजस्थान के प्रमुख दुर्ग व किलें 137
(8) राजस्थान के प्रमुख त्यौहार व मेले 145
(9) राजस्थान की हस्तकला 151
(10) राजस्थान की चित्रकला 154

भारत का संविधान

(1) संविधान सभा 158
(2) प्रस्तावना 161
(3) मौलिक अधिकार 164
(4) राज्य के नीति निदेशक तत्व 178
(5) मौलिक कर्तव्य 179
(6) संघ की कार्यपालिका (राष्ट्रपति) 182
(7) भारत का उपराष्ट्रपति 189
(8) प्रधानमंत्री 192
(9) मंत्रिमंडल 194
(10) संसद 196
(11) सर्वोच्च न्यायालय 212
(12) CAG 216
(13) राज्य की कार्यपालिका (राज्यपाल) 217
(14) राज्य का विधानमण्डल 219
(15) पंचायतीराज 220

भारत का इतिहास कला एवं संस्कृति

हड़प्पा सभ्यता – उल्लेख 1826 में चार्ल्स मेसन

1853–56 रेलवे – लाहौर से करांची तक – ईंटों का प्रयोग (हड़प्पा सभ्यता की ईंट) दो भाइयों ने ईंटों पर रोक लगाई (जॉन बर्टन और विलियम बर्टन)

भारतीय पुरातत्व विभाग – 1861 में कनिंघम अलैक्जंण्डर अधिकारी

- 1921 में जॉन मार्शल महानिर्देशक – राय बहादुर, दयाराम सहानी – हड़प्पा – पंजाब – मोंटगोमरी – शाहीवाल
- 1922 – राखल दास बनर्जी – सिंध प्रांत – मोहन जोदड़ो (मुर्दो का टीला)
- 12 लाख 99 हजार 600 वर्ग किमी

इस सभ्यता का सर्वप्रथम उल्लेख चार्ल्स मेसन ने 1826 में किया गया।

1853 से 56 के बीच करांची से लाहौर के मध्य बिछने वाली रेलवे लाइन में इस सभ्यता से संबंधित ईंटों का प्रयोग किया गया।

इन ईंटों की पहचान जॉन बर्टन और विलियम बर्टन पुरातत्वविदों ने की।

- 1921 में भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिर्देशक जॉन मार्शल के निर्देशन में राय बहादुर, दयाराम सहानी के नेतृत्व में हड़प्पा नामक स्थान की खोज की गई।
- हड़प्पा तत्कालीन पंजाब प्रांत के मोंटगोमरी नामक जिले में स्थित था। स्वतंत्रता के पश्चात यह आधुनिक पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में शाहीवाल जिले में स्थित है।
- 1922 में राखल दास बनर्जी के द्वारा सिंध प्रांत में लरकाना जिले में मोहनजोदड़ो नामक स्थान का उल्लेख (उत्खनन) हुआ।
- मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ है – मुर्दो का टीला
- स्वतंत्रता से पूर्व सम्पूर्ण हड़प्पा सभ्यता का क्षेत्र 12 लाख 99 हजार 600 वर्ग किमी था जो अब बढ़कर लगभग 20 लाख वर्ग किमी हो गया।
- वर्तमान में यह सभ्यता अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत में स्थित है।
- हड़प्पा सभ्यता का सबसे अधिक संकेन्द्रण घग्घर–हकरा (पाकिस्तान में इसे हकरा)में मिलती है।
- हड़प्पा सभ्यता के अब तक 350 स्थल खोजे जा चुके है जिनमें सर्वाधिक स्थल गुजरात प्रांत में है।
- आजादी के बाद खोजा गया पहला स्थल रोपड (पंजाब, 1950) था।

हड़प्पा सभ्यता से संबंधित विभिन्न स्थल–

स्थान और नदियों के नाम–

स्थल	नदी
शोर्तगुई	अमुदरिया (आक्सस)
मांडा (जम्मू कश्मीर)	चिनाब
हडप्पा	रावी
मोहनजोदडों, चंगु, कोटदजों	सिंधु
सुत्कांगेडोर	दाश्क
सुत्काकोह	शादी कौर
बालाकोट	विंदार
रोपड, बाडा	सतलज
हरियाणा के सभी स्थल	सरस्वती
कालीबंगा	घग्घर
आलम	हिंडन (यमुना की सहायक नदी)
धौलावीरा	मानहर, मानसर
लोथल	भोगवा
रंग, रोजदा	भादर (मध्य भारत कीयही दो नदियाँ)
भगत	नर्मदा
मालवण	ताप्ती
दैमाबाद	प्रवरा (गोदावरी की सहायक नदी)

<u>हडप्पा सभ्यता लिपि</u>

- हडप्पा सभ्यता से अभी तक 2967 अभिलिखित वस्तुएँ प्राप्त हो चुकी है।
- किंतु अभी तक यह लिपि अपठित है।
- इसे पढने का सर्वप्रथम प्रयास 1925 में वेडन द्वारा किया गया था।
- अंतिम प्रयास 307वां में डा. नटवर झा ने किया था।
- यह लिपि भावचित्रात्मक शैली (लिपि) थी।
- कुल 250–400 के बीच अक्षर मिल चुके है किंतु मूल अक्षर 62 है।

- यह लिपि दाए से बाए और बाएं से दाएं लिखी जाती है। इसलिए इसे बोस्त्रोफेदन लिपि कहा जाता है। और गोमूत्रीका लिपि भी कहा जाता है।

हडप्पा सभ्यता के निवासी या निर्माता –

निर्माता –

1. प्रजातीय आधार पर – इस आधार पर हडप्पा सभ्यता में 4 प्रजातीयों के साक्ष्य मिले है।
   1. भू–मध्य सागरीय – सर्वाधिक कंकाल इस प्रजाति के मिले है।
   2. मंगोलाइड्स
   3. एल्पाइन
   4. प्रोटो ऑस्ट्रेलियाड
2. सांस्कृतिक आधार पर –

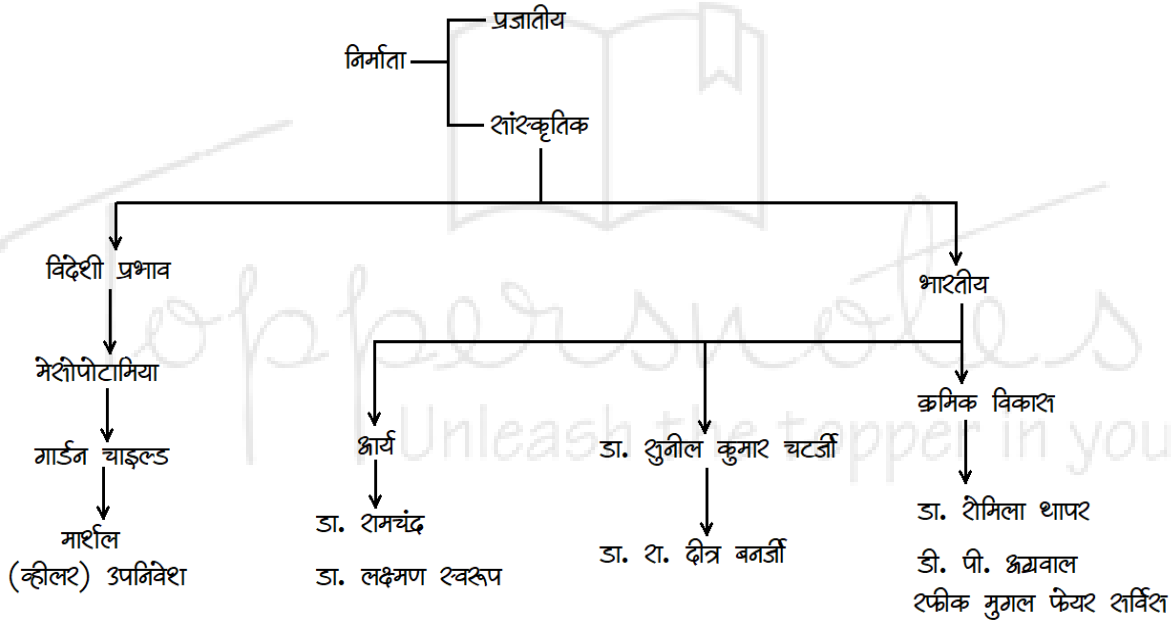

हडप्पा सभ्यता का कालक्रम –

- 1931 में सर्वप्रथम जॉन मार्शल ने मेसोपोटामिया के सारगोन अभिलेख के आधार पर इस सभ्यता का कालक्रम निर्धारित किया था।
  जॉन मार्शल – 3250 – 2700 ई.पू.

  एम. एस. वत्स (माधव स्वरूप वत्स) – 3500–2500 ई.पू.

  मैके – 2800–2500 ई.पू.

रेडियो कार्बन – 2350–1750 ई.पू.

- आधुनिक इतिहासकार हड़प्पा सभ्यता के चरण मानते हैं–
  प्राक हड़प्पा (ग्रामीण) काल – 2800–2500 ई.पू.
  विकसित हड़प्पा काल – 2500–2200 ई.पू.
  हड़प्पोत्तर काल – 2200–1700 ई.पू.

हड़प्पा सभ्यता की विशेषताएँ –

1. नगर नियोजन –
   सामान्यत हड़प्पा सभ्यता के नगर दो भागों में विभक्त होते थे।
   पश्चिमी भाग – पश्चिमी भाग का क्षेत्रफल कम था।
   - पश्चिमी भाग के भवन बड़े थे।
   - भवन की स्थित ऊचांई पर थें
   - इस नगर के चारों ओर दीवार थी जो दुर्गीकरण कहते हैं।
   - यह भवन सार्वजनिक थे और शासकीय थे।

   पूर्वी भाग – क्षेत्रफल अधिक
   भवन के आकार छोटे
   - भवन की स्थित नीचे स्थित थे।
   - अदुर्गीकरण
   - आवासीय (भवन थे)

1. अपवाद – यह धौलावीरा में तीन नगर स्तर हैं।
2. चगुदड़ों, लोथल – एक ही टीलें पर दोनों नगर समान ऊँचाई पर स्थित थे।
3. सुरकोटडा, बनावली, लोथल – एक ही घेरे या एक ही दिवार से घिरे हुए।
4. मोहनजोदड़ो, कालीबंगा – इसमें दोनों नगर के दोनों भाग अलग-अलग दिवारों में सुरक्षा हेतु घिरे हुए हैं।
5. सुत्कांगेडोर – नगर के दोनो भाग प्राकृतिक चट्टान पर बने हुए थे।

भवन – अधिकांशतः सामान्यतः भवन पक्की ईंटों से बने होते थे और ईंटों का आकार 4:2:1 में होता था।

भवन सड़कों एवं गलियों के किनारे बने हुए थे।

अपवाद – रंगपुर में

- कालीबंगा व रोजदी के भवन कच्ची ईंटों से बने थे किंतु स्नानागार व कुएं पक्की ईंटों से बने हुए होते थे।
- सामान्यतः भवनों के मुख्य द्वार मुख्य सड़क पर नहीं खुलते थे बल्कि पीछे की ओर गली में खुलते थे।

अपवाद – लोथल

- खिडकियां नहीं होती थी बल्कि रोशनदान होते थे। सभी भवनों में अलग से स्नानागार और शौचालय भी होते थे।

अपवाद – हडप्पा नगर

- हडप्पा नगर के अतिरिक्त सभी जगह नगरों में कुएं होते थे।
- भवनों की छते लकडी, कोल्हू और मिट्टी से बनाई जाती थी और फर्श ईंटों के टुकडों से बनाई जाती थी।

नोट:– हडप्पा में कुएं नहीं थे।

सडक –

- नगर की मुख्य सडक हमेशा उत्तर–दक्षिण दिशा में होती थी।
- सभी सडके जालीनुमा थीं
- सडके एवं गलिया कच्ची तो थी परंतु मजबूत थी।
- नगर में प्रवेश करने के लिए द्वार पूर्व दिशा में होता था।
- सभी सडके व गलियां एक–दूसरे को समकोण पर काटती थी।

नाली व्यवस्था –

- यह हडप्पा सभ्यता के नगर नियोजन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है।
- नालियां मुख्य सडकों और गलियों के किनारे होती थी।
- नालियां पक्की हुई ईंटों से बनी हुई होती थी और ईंटों को जोडने के लिए चुना व जिप्सम का प्रयोग किया जाता था।
- घरो का पानी सडकों की नालियों में आकर मिल जाता था।
- नालियों को बडी–बडी ईंटों व पत्थरों से ढका जाता था।
- नालियों में एक निश्चित दूरी पर ठोस कचरा एकत्रित करने के लिए खड्डे बने होते थे जिंहे मेनहोल कहा जाता था।

अपवाद – बनीवली और कालीबंगा

- बनावली और कालीबंगा में सार्वजनिक नाली व्यवसाी नहीं थी।
- वे लोग अपने घरों के बाहर गहरे गड्डे खोदकर उसमें छिद्रनुमा मटके रखे जाते थे। इन छिद्रों के माध्यम से पानी जमीन में चला जाता था।
- कालीबंगा में नाली बनाने के लिए पेड के तनों का प्रयोग किया जाता था।

हडप्पा के सार्वजनिक भवन –

विशाल अन्नागार – हडप्पा नगर के दुर्ग क्षेत्र व रावी नदी के समीप 6-6 भवनों की दो कतारे मिली हैं। इन्हें विशाल अन्नागार कहा जाता है। अन्नागारों की दक्षिण दिशा में 18 गोल चबुतरे मिले है जिन पर ओखलियाँ बनी हुई है। सभंवत यहां पर अनाज कूटा जाता होगा।

चबूतरो की दक्षिण दिशा में 7 और 8 भवनों की दो कतारे मिली है यह भवन बहुत छोटे थे।

इतिहासकार के सार्वजनिक भवन –

1. विशाल स्नानागार–
   यह मोहनजोदडों के दुर्ग क्षेत्र में स्थित एक विशाल संरचना है जिसमें 180 फिट लम्बा और 108 फीट चौडे चबूतरे के बीच में एक कुण्ड बना हुआ है। जिसकी लम्बाई 39 फिट चौडाई 23 फिट और गहराई 8 फिट है।
   कुण्ड में उतरने के लिए उत्तर व दक्षिण दिशाओं में सीढियां बनी हुई है। यह कुण्ड पक्की ईंटों से बना हुआ है। ईंटों को जोडने के लिए चुने के साथ जिप्सम का प्रयोग किया गया है तथा ईंटों को सीलन से बचाने के लियें बिटूमिन का लेप किया गया था। यह एक जल रोधक पदार्थ है।
   कुण्ड के तीन कमरे बने हुए है जिनमें से एक कमरे में बडा कुआ बना हुआ है सम्भवतः इसका प्रयोग कुण्ड को भरने के लिए किया जाता था।
   इस विशाल स्नानागार को इतिहासकार व्हीलर ने पवित्र स्नानागार कहा है।
. मार्शल ने इसे तत्कालीन विश्व का आश्चर्य जनक निर्माण कहा है।

पुरोहित आवास – स्नानागार के समीप एक आयताकार भवन मिला है। जिसकी लम्बाई लगभग 70 मी. व चौ 24 मी. थी। भवन में चारों तरफ कमरे बने हुए थे बीच में 10×10 मी. का एक वर्गाकार आंगना/चौक था।

स्नानागार के समीपता के कारण इसे मुख्य पुरोहित का आवास माना जाता है।

किंतु कुछ इतिहासकार इसकी डिजाईन के आधार पर इसे महाविद्यालय मानते है।

सभागार/बाजार – स्नानागार की दक्षिण दिशा में 27×27 मी. का एक वर्गाकार भवन मिला है जिसमें पांच-पांच स्तम्भों की 4 कतारे मिली है।

सम्पूर्ण हडप्पा सभ्यता में खम्भों वाली यह एक मात्र इमारत मिली है।

अन्नागार – स्नानागार की पश्चिम दिशा में 46मी लम्बा और 23 मी. चौडा भवन मिला है। जिसमें 27 आले बने हुए थे।

इन आलों में जौ व गेंहू के निशान मिले है इसलिये इसे अन्नागार कहा जाता है।

हडप्पा सभ्यता की राजनीतिक स्थितिः- सुपाठ्य लिपि के अभाव में हडप्पा सभ्यता की राजनीतिक स्थिति के बारे में निश्चित रूप से कुछ भी कहा जाना असम्भव है।

- हड़प्पा सभ्यता से हथियार बहुत कम मिले है। अर्थात् वहां से सैनिक शक्ति का कोई विशेष महत्तव नहीं था।
- इसलिए सम्भवतः वहां राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था भी नहीं थीं
- इतिहासकार हन्टर व मैके हड़प्पा सभ्यता में प्रतिनिधि प्रकार की जनतंत्रात्मक शासन व्यवस्था को स्वीकार करते है।
- इहतहासकार पिग्गट मोहनजोदड़ों और हड़प्पा को सिंधु सभ्यता की जुड़वा राजधानियां मानते है।
- डा. दशरथ शर्मा कालीबंगा को हड़प्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी मानते है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

सामाजिक व्यवस्था

1. परिवार – भवनों के आकार के आधार पर यह स्पष्ठ होता है कि यहां एकल परिवार व्यवस्था थी। अधिकांश मूर्तियों और मुद्राओं पर नारी का चित्रण हुआ है अर्थात् परिवार मातृसत्तात्मक थे।
2. वर्गीकरण – समाज 4 वर्गो में विभक्त था जो इस प्रकार है–
   1. पुरोहित 2. शासक वर्ग 3. वाणिक वर्ग 4. श्रमिक वर्ग

   इसमें योद्धा वर्ग नहीं था।

3. खान–पान – लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनों थे। गेहूं, जौ मुख्य खाद्यान्न थे। मोहनजोदडो और लोथल से बाजरे के साक्ष्य मिले है।

- रागी (राई) के साक्ष्य नहीं मिले है।
- रंगपुर और लोथल में चावल की भूसी मिली है तथा कालीबंगा में जले हुए चावल मिले है।
- किंतु यह दोनों साक्ष्य ऊपरी स्तरों पर मिले है अतः हडप्पा सभ्यता के लोग चावल से परिचित नहीं थे।

4. वेश–भूषा – हडप्पावासी सूती वस्त्र व ऊनी वस्त्र दोनों प्रकार के वस्त्र धारण करते थे। मोहनजोदडों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति से यह स्पष्ठ हो जाता है कि हडप्पावासी तीपतीया (लहरदार) प्रणाली के द्वारा भी सुत बुनना जानते थे। स्त्री और पुरूष दोनों ही आभूषण पहनते थे। सामान्यतः पुरूष मूछों के बिना दाढी रखते थे। हडप्पा से छःलडियों का सोने का हार श्रृगारदानी मिली है।

- बनावली के एक भवन में बडी मात्रा में आभूषण और बहुमुल्य पत्थर मिले है इसलिये इसे जौहरी आवास भी माना जाता है।
- लोथल से तांरे के आकार का एक कान का बाला मिला है।
- कुनाल में चांदी के दो मुकुट मिले है।

5. मनोरंजन – मनोरंजन के लिए आउट डोर और इनडोर दोनों प्रकार के खेल प्रचलित थे।

हडप्पावासी मुख्यतः इनडोर खेल के शौकिन थे। जिसमें सबसे ज्यादा पासा खेलना प्रचलित था। हडप्पावासी नृत्य, संगीत के भी शौकिन थे।

मोहनजोदडों से प्राप्त कांसे की नृत्की की मूर्ति इसकी साक्षी है। यह मूर्ति 4½ इंच लम्बी है। जिसने अपने शरीर को गहनों से ढक रखा है।

इतिहासकार मैकिन ने इसे मधुबाला (शराब परोसने वालीह के रूप में) स्वीकार करते है।

- हडप्पा से एक मृद पात्र के घडे पर मछली का चित्र मिला है अर्थात् यह मछली पकडने के शौकिन थे।

- धौलाविरा (कच्छ) के पास कुरन नामक स्थान पर मैदान और चारों तरफ भवन बने होने के अवशेष मिले हैं।

6. अंतयेष्ठि क्रिया:- यहां दो प्रकार की अंतयेष्ठि क्रिया प्रचलित थी।

1. दाह क्रम 2. शवदान (गाडना) क्रिया

- मोहनजोदड़ों में कोई भी कब्रिस्तान नहीं मिला है अर्थात् यहां दाह क्रम प्रचलित था।
- हडप्पा में दो कब्रिस्तान मिले हैं - 1. कब्रिस्तान R37 2. कब्रिस्तान H
- लोथल में शव के साथ कुत्ते के साक्ष्य मिले है और हडप्पा में शव के साथ बकरे के साक्ष्य मिले हैं।
- लोथल में युगल समाधि के साक्ष्य मिले हैं।

आर्थिक व्यवस्था

1. कृषि - हडप्पा सभ्यता का नगरीकरण कृषि की उन्नतता को प्रदर्शित करता है।
   1. जुता हुआ खेत - कालीबंगा इस खेत में दो प्रकार की हराईयाँ मिली हैं। आडी और सीधी। आडी में चना बोया जाता था व सीधी में सरसों बोये जाने के साक्ष्य मिलें है अर्थात हडप्पावासी एक ही समय पर दो फसलें उगाना जानते थे।
      हडप्पा के किसी भी स्थल से कोई भी हल नहीं मिला है किंतु बनावली से हल का मिट्टी का खिलौना मिला है।
   2. सिंचाई - सामान्यतः सिंचाई कुओं के द्वारा होती थी किंतु शोमेदों, मोहनजोदड़ों, लोथल नहर के साक्ष्य मिले हैं।

2. पशुपालन - सर्वाधिक अंकन बैल का मिला है। मोहनजोदड़ो 1. कूबडदार 2. कूबड रहित दो प्रकार के बैलों के चित्र मिले है।

- कूबडदार - कूबडदार बैलों का कृषि में महत्तव था।
- कूबड रहित - इन बैलों का धार्मिक महत्तव था।
- घडियाल के साक्ष्य केवल मोहनजोदड़ों से मिले है।
- गैण्डे की अस्थियां आमरी (सिंध) में मिले है।
- गधा की अस्थियां (जबडा) हडप्पा से मिले है।
- ऊँट की अस्थियां अनेक स्थानों पर मिली है किंतु किसी भी मोहर पर ऊँट का अंकन (चित्र) नहीं मिला है।
- गाय की न तो अस्थियां मिली है और न ही चित्र मिला है।
- हडप्पावासी शेर से परिचित नहीं थे।
- घोडा के साक्ष्य
  - लोथल से मिट्टी का खिलौना
  - सुरकोटडा से अस्थियां

- रानी घुण्डई (ब्लूचिस्तान) से दांत
- किंतु यी सभी साक्ष्य ऊपरी स्तरों पर मिले है। निष्कर्षतः हड़प्पावासी घोडे से अपरिचित थे।
- मोहनजोदड़ों और राजदी से हाथी के साक्ष्य मिले है।
- मोहनजोदड़ों में हाथी का कपाल खण्ड/पुरा का पुरा दांत मिला है।

3. माप-तौल - मोहनजोदड़ों तांबे का तराजू मिला है।

- मोहनजोदड़ों से ही सीप से बना हुआ एक स्केल मिला है।
- बाट - सभी बांट 16 के गुणज में मिले है।

4. व्यापार-वाणिज्य - व्यापार दो प्रकार के थे-

1. देशी (आंतरिक) 2. विदेशी

विदेशी - 1. लोथल - फारस की मुद्रा

2. कालीबंगा - मेसोपोटामिया (बेलनाकार मोहर)

मेसोपोटामिया में एक लेख (अभिलेख) मेसोपोटामिया के सारगोन अभिलेख ने हड़प्पा सभ्यता के लिए मेहुला शब्द प्रयोग हुआ है। इस अभिलेख से सिद्ध होता है कि सिंधु सभ्यता का व्यापार अनेक स्थलों के साथ था।

उद्योग-शिल्प -

1. ईंट उद्योग
2. मोहरे बनाने का उद्योग
3. मूर्ति उद्योग
4. बूनकर (कपडा) उद्योग
5. सिलाई उद्योग
6. मणका उद्योग चंगुदड़ों लोथल में साक्ष्य मिले है।
7. सीप उद्योग - बालाकोट और लोथल

हड़प्पा सभ्यता की धार्मिक स्थिति

1. मातृ पुजा - सभी स्थानों पर नारी मूर्तियों और मुद्रा पर नारी अंकन
   - हड़प्पा से प्राप्त एक मोहर पर नारी के (धरती माँ) के गर्भ से पौधा निकलते हुए दिखाया गया है जो संभवत् उर्वा देवी या पृथ्वी का प्रतीक है।
   - हड़प्पा से ही प्राप्त एक मोहर पर नारी अंकन है तथा उस पर धूप-धुआं के अवशेष मिले है।
   - ब्लूचिस्तान से प्राप्त नारी मूर्तिया, नारी मूर्तियों का रूप रोद्र है।
   - कालीबंगा से मातृ पूजा के साक्ष्य नहीं मिले है।

2. शिव पूजा – शिव की पूजा उसकी अमूर्त और मूर्त दोनों रूपों में मिलती है लगभग सभी स्थानों पर पत्थर पर असंख्य लिंग योनि के साक्ष्य मिले है।
    - शिव के मूर्त रूप के साक्ष्य मोहनजोदड़ों से मिले है। (सिर्फ मोहनजोदड़ों) में।
    - मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मोहर पर तीन सिर वाले मनुष्य का अंकन है। जिसके पीछे त्रिशुल या मुकुट या सिंग का चित्रण है।
    - यह पुरूष पद्मासन में बैठा है और हाथ आकाश की ओर उठा हुआ है और दोनों हाथ चूडियों से भरे हुए है।
    - बाएं ओर हाथी और बाघ (टाइगर) का चित्र है।
    - दाएं ओर भैसा और गेंडा का चित्र है।
    - सामने दो हिरण के चित्र है।
    - इतिहासकार इसे पशुपतिनाथ की संज्ञा देते है जो आदिम/ प्राचीन रूप है।
3. जल पूजा – मोहनजोदड़ों
4. प्रतीक पूजा – अनेक मोहरों पर चक्र स्वास्तीक त्रिशुल आदि के चिन्ह प्रतीक पूजा को प्रदर्शित करते है।
5. पशु पूजा – कूबड रहित बैल की पूजा/ एक सिंग श्रृंगी पशु की पूजा लोथल से नाग पूजा के साक्ष्य मिले है।
6. पक्षी पूजा – कमेंडी (फाख्ता) पूज्य पक्षी
7. अग्नि पूजा – अग्नि पूजा के साक्ष्य लोथल और कालीबंगा से मिले है।
    - कालीबंगा में 7 अग्नि कुण्ड मिले है जिनमें से एक अग्निकुण्ड में पशुओं की हड्डियां मिली है जो संभवतः बलिप्रथा की ओर संकेत करती है।

नोटः– (जिसमें रोपड से हाथी मिला है)

8. वृक्ष पूजा – पीपल की पूजा
    - लगभग सभी स्थलों पर असंख्यक ताबिज मिले है अर्थात् हडप्पावासी जादू-टोना में विश्वास करते थे।
    - कब्रों में शव के साथ दैनिक उपयोग में लाई जाने वाली वस्तुएँ मिली है जो मृत्यु उपरांत जीवन का प्रतीक (मटकी, खाट आदि) है।

हडप्पा सभ्यता का पतन

1. बाढ – मार्शल, मैके और एस. आर. राव (बाढ)
   क्योंकि अनेक नगरों में मकानों में रेत (गाग) और किचढ मिला है।
2. भूकम्प और जलप्लावन – राइकस, साहनी और डेल्स (साहित्यकार)
    - इनके अनुसार कालीबंगा और हडप्पा में भूकम्प के साक्ष्य मिले है।
    - भूकम्प के कारण संभवत् समुद्रतट ऊपर उठ गया था जिससे नदियों का पानी समुद्र में ना गिरके भूमि पर फैल गया जिसे जल प्लावन कहते है।

3. नदियों द्वारा मार्ग प्रशस्त (परिवर्तन) करना –
   इतिहासकार – माधव स्वरूप वत्स, लैम्ब्रिक
4. सूखा एवं अकाल – डी. पी. अग्रवाल
5. जलवायु परिवर्तन – स्टाइन, घोष
6. बाह्य आक्रमण या आर्यो का आक्रमण – व्हीलट, चाइल्ड
   - इनके अनुसार ऋग्वेद में इंद्र को पुरहंता कहा गया है अर्थात् उसने नगरों का विनाश किया था। सम्भवतः यह नगर हडप्पा सभ्यता से संबंधित है।
7. प्रशासनिक शिथिलता – जॉन मार्शल के अनुसार मेसोपोटामिया के अभिलेखों में धीरे-धीरे मेलूहा शब्द समाप्त हो गया जो विदेशी के व्यापार के पतन को प्रदर्शित करता है।
   - इसका कारण प्रशासनिक अव्यवस्था हो सकता है।

क्र.स.		नाम	खोज	इतिहासकार
1	ह.	हडप्पा		डी. आर. (दयाराम साहनी)
2	म.	मोहनजोदडो		राखालदास
3	शु.	शुद्धकांगेडो		स्टाइन
4	चं.	चंगुदडो		एन. जी. मजूमदार
5	रं.	रंगापुर		माधवस्वरूप वत्स
6	को.			घुर्ये
7	रोपड			बांके बिहारी लाल, यज्ञ दत्त शर्मा
8	लो	लोथल		एस. आर. राव
9	आ	आलम		यज्ञ दत्त शर्मा
10	का	कालीबंगा		अमलानन्द घोष
11	सुको			डेल्स
12	देश	देशलपुर		कमेटी द्वारा खोज
13	सुर	सुरकोटडा		जे. पी. जोशी (जगपति)
14	ब	बनावली		बिस्ट
15	देमा	देमाबाद		कमेटी द्वारा खोज
16	धो	धौलाविरा		बिस्ट

नोटः- देमाबाद - कांसे की ईक्का गाडी मिली

हडप्पा - पीतल की बैल गाडी मिली।

वैदिक सभ्यता या आर्य सभ्यता

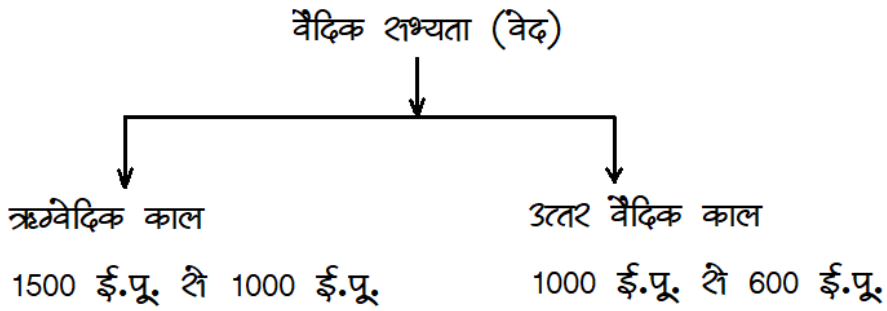

. वेद – विद् – ज्ञान/ जानना

वेद	संहिता	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्
ऋग्वेद	एतरेय, कौषितकी	"	"	"
यजुर्वेद	शुक्ल यजु कृष्ण यजु	शतपथ तैतरिया	बृहदारण्यक तैतरीय	बृहदारण्येक ईशोपनिषद कठोपनिषद श्वेताश्वेतर मैत्रेय तैत्रेय
सामवेद	साम संहिता	पंचविश षडविश, जेमिनीय, अद्भूत	छान्दोग्य जैमिनीय	छान्दोग्य जैमिनीय कैन
अथर्ववेद	अथर्व संहिता	गोपथ		माण्डूक्य मुण्डक, प्रश्नों उपनिषद्

वेद शब्द – विद् धातु से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है ज्ञान या जानना।

– ये विश्व की प्राचीनतम रचनाओं में एक है।

– वेद चार प्रकार के है।

– प्रत्येक वेद के चार भाग होते है–

1. संहिता – मंत्रों का सकल संहिता कहलाता है।

2. ब्राह्मण – मंत्रों की गद्यात्मक व्याख्याएँ ब्राह्मण कहलाती है।
3. आरण्यक – यह आरण्य शब्द से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है वन और भावार्थ है 'एकान्त' अर्थात वे ग्रंथ जिनका अध्ययन व अध्यापन एकांत में किया जाता है आरण्यक कहलाते है।
   – इनमें यज्ञों की रहस्यात्मक व्याख्याएँ मिलती है।
4. उपनिषद – वे ग्रंथ जिनमें आत्मा, परमात्मा जैसी आध्यात्मिक चर्चाएँ हुई है उपनिषद् कहलाते है।

1. ऋग्वेद – यह सबसे प्राचीन और वृहत्त (बडी) संहिता है। इसमें देवताओं की उपासना करने के लिए प्रशंसात्मक मंत्रों का संकलन है।

ऋत्विज – यज्ञों का पुरोहित

– इससे संबंधित ऋत्विज या पुरोहित होता जो यज्ञ से संबंधित देवता का आहवान करता है।

– ऋग्वेद में प्रारम्भ में 10 मण्डल 1017 सूक्त 10462 मंत्र थे।

– कालांतर में पांडुलिपियों के रूप में 11 सूक्त और मिले जिंहे ऋग्वेद के 8वें मण्डल जोडा गया। इन अतिरिक्त सूक्तों को ही बालाखिल्य सूक्त कहा जाता है।

– अतः वर्तमान में ऋग्वेद के 10 मण्डल व 1028 सूक्त 10598 मंत्र है।

– कुल शब्द 1,53,572 है।

– ऋग्वेद के सभी मण्डल किसी न किसी ऋषि को समर्पित है।

1. अंगीरा ऋषि (देवी सूक्त–गायत्री मंत्र)
2. भार्गव
3. विश्वामित्र
4. वामदेव
5. अत्रि
6. भारद्वाज
7. वशिष्ठ
8. कण्व (11 सूक्त के साथ जोडे गए)
9. सोम
10. दूसरे से सातवें मण्डलों को वंश मण्डल कहा जाता है।

पहला व 10 मण्डल नवीनतम मण्डल है।

2. यजुर्वेद – यज्ञ विधि से संबंधित मंत्रों का संकलन यजु संहिता या यजुर्वेद कहलाता है।